Achievements of Chandra Gupta Maurya

चन्द्रगुप्त मौर्य की उपलब्धियाँ B.A. I Hons (History)

अज्ञात पिता का विख्यात पुत्र

उत्तर :- चन्द्रगुप्त मौर्य भारत का प्रथम ऐतिहासिक सम्राट था और भारत में एक विशाल साम्राज्य का निर्माण किया था। उसे भारतीय इतिहास तो क्या विश्व - इतिहास के श्रेष्ठ साम्राटों की श्रेणी में रखा जा सकता है।

विशाल मौर्य साम्राज्य के संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य का जन्म लगभग 345 ई० पू० में हुआ था। उसके वंश के सम्बन्ध में लेखकों में मतभेद है। यूनानी लेखक जस्टिन के अनुसार चन्द्रगुप्त का जन्म निम्नकुल में हुआ था। जैन अनुश्रुति के अनुसार भी यह किसी ऊँचे कुल का नहीं था कुछ लोगों के अनुसार चन्द्रगुप्त का जन्म नन्द राजा की मुरा नामक स्त्री से हुआ था। वृहत्कथा, तथा मुद्राराक्षस कभी चन्द्रगुप्त को शूद्र घोषित करते हैं लेकिन इसके विपरीत बौद्ध अनुश्रुतियों के अनुसार चन्द्रगुप्त क्षत्रिय वंशीय था। बौद्ध ग्रन्थ महापरिनिब्बान सुत्त से इस बात का पता चलता है कि चन्द्रगुप्त मोरिय क्षत्रिय कुल का था जो जीवन में रहते थे। रलिसन, सरजान मार्शल तथा हेमचन्द्र राय चौधरी भी चन्द्रगुप्त को क्षत्रिय स्वीकार करते हैं।

नन्दो से युद्ध :- चन्द्रगुप्त का प्रारम्भिक जीवन पाटलिपुत्र में बीता और वह नन्द राजा की सेना में काम करता था पर अपने स्वामी से किसी कारणवश असन्तुष्ट होकर प्रतिकार की भावना से चन्द्रगुप्त राज्य छोड़कर चला गया और उसी समय उसे आचार्य चाणक्य या कौटिल्य नामक महान कूटनीतिज्ञ से मुलाकात हुई जो नन्दराजा द्वारा अपमानित होने पर नन्दवंश का समूल नाश करने का प्रण कर प्रवास कर रहा था। चन्द्रगुप्त और चाणक्य दोनों नन्दवंश का नाश चाहते थे अतः दोनों में सामान्य उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक स्वामी सम्बन्ध स्थापित हुआ। इसी समय सिकन्दर का आक्रमण भारत पर हुआ। अपने उद्देश्य की पूर्ति

सिकन्दर से युद्ध :- के लिए चन्द्रगुप्त पंजाब में सिकन्दर से मिला और कुछ दिनों तक उसके शिविर में रहा। परन्तु चन्द्रगुप्त के स्वतंत्र विचार के कारण सिकन्दर उससे अप्रसन्न हो गया और उसका वध कर देने की आज्ञा दे दी। चन्द्रगुप्त अपनी जान बचाकर भागा। अब उसने मगध राज्य के विनाश के साथ - साथ यूनानियों को भी अपने देश से मार भगाने का निश्चय कर लिया।

सिकन्दर के चले जाने के उपरान्त भारतीयों ने यूनानियों के विरुद्ध आन्दोलन आरम्भ कर दिया। चन्द्रगुप्त ने अवसर से लाभ उठाया और क्रान्तिकारियों का नेतृत्व ग्रहण किया तथा यूनानियों को पंजाब से भगाना आरम्भ किया। यूनानी क्षत्रप प्रदेशों अन्य यूनानियों के साथ भारत छोड़कर भाग गया और जो यूनानी सैनिक भारत में बस गये वे तलवार के घाट उतार दिये गये इस प्रकार चन्द्रगुप्त ने सम्पूर्ण पंजाब पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया।

मगध साम्राज्य का उत्थान : पंजाब पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लेने के बाद चन्द्रगुप्त ने मगध राज्य पर

Scanned with CamScanner

साथ राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र के निकट पहुँच गयी । अन्त में नन्दराजा - धनानन्द की पराजय हुई और अपने परिवार के साथ वह युद्ध में मारा गया । चन्द्रगुप्त पाटलिपुत्र के सिंहासन पर बैठा और चाणक्य ने 322 ई०पू० में उसका अभिषेक कर दिया ।

दक्षिण भारत पर अधिकार :- उत्तर भारत पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लेने के उपरान्त चन्द्रगुप्त दक्षिण भारत पर भी अपनी विजय पताका फहराने का निश्चय किया । सर्वप्रथम सौराष्ट्र पर अधिकार स्थापित किया और पुष्यगुप्त वैश्य को वहाँ का प्रबन्ध करने नियुक्त कर दिया । इस प्रकार काठियावाड़ तथा मालवा पर चन्द्रगुप्त का प्रभुत्व स्थापित हो गया । इतिहासकारों की धारणा है कि मैसूर की सीमा तक चन्द्रगुप्त साम्राज्य फैला हुआ था ।

सेल्यूकस के साथ युद्ध :- चन्द्रगुप्त का अन्तिम संघर्ष सिकन्दर के सेनापति सैल्यूकस के साथ हुआ सिकन्दर की मृत्यु के बाद सैल्यूकस अपने साम्राज्य के पूर्वी भाग का अधिकारी बना उसने 305 ई०पू० में भारत पर आक्रमण कर दिया । चन्द्रगुप्त की सेना ने सिन्धु उस पार ही सैल्यूकस की सेना को सामना किया । युद्ध में सैल्यूकस की पराजय वह विवश होकर चन्द्रगुप्त के साथ सन्धि कर लिया । सैल्यूकस ने अपनी क का विवाह चन्द्रगुप्त के साथ कर दिया और वर्तमान अफगानिस्तान तथा बलुचिस्ता सम्पूर्ण प्रदेश को चन्द्रगुप्त को दे दिया । उसने मेगास्थनीज नामक एक राजदूत चन्द्रगुप्त की राजधानी पाटलीपुत्र में भेजा ।

उपर्युक्त विजयों से चन्द्रगुप्त का साम्राज्य पश्चिम में हिन्दुकुश पर्वत से बंगाल तक और उत्तर में हिमालय पर्वत से दक्षिण में कृष्णा नदी तक फैल गया । लेखक प्लूटार्क और जस्टिन के अनुसार चन्द्रगुप्त का अधिकार सम्पूर्ण भारतवर्ष पर

कुशल शासक के रूप में :- चन्द्रगुप्त न केवल एक महानविजेता वरन् कुशल शासक भी था जिस व्यवस्था का उसने निर्माण किया वह इतनी उत्तमसिद्ध हुई कि भावी शासकों के आदर्श बन गयी । केन्द्रीय शासन का प्रधान स्वयं सम्राट करता था और उसी की तथा आदेशों के अनुसार सम्पूर्ण देश का शासन चलता था । वह स्वयं कानूनों का नि करता था और वही नियमों का उल्लंघन करने वालो को दण्ड भी देता था। वह प्रशासकीय विभाग के साथ - साथ सैनिक विभाग का भी प्रधान था । राज्य की

Scanned with CamScanner

सम्राट स्वयं सबसे बड़ा न्यायधी या था राजा के वी े अन्य न्यायाधी कठोर दंड की व्यवस्था थी ।

प्रा विभाजन: चन्द्रगुप्त का साम्राज्य बड़ा था अतएव शासन की सुविधा के लिए साम्राज में बाँट दिया गया था और प्रत्येक प्रान्त के शासन के लिए एक प्रान्तपति नियु गाँव शासन की सबसे छोटी इकाई थी । जिसका प्रबन्ध ग्रामिक करता था । न समस्याओं के समाधान के लिए आधुनिक नगरपालिकाओं का संगठन किया गया था मेगास्थनीज ने किया है।

यातायात की सुविधा एवं प्रजा भलाई के लिए कार्य :- चन्द्रगुप्त राज्य के मंगलकारी होने में विश्वास करता अतः उसने यातायात समुचित व्यवस्था की । उसने सड़कों का निर्माण कर एक नगर से दूसरे नगर क सड़कों के किनारे छायादार वृक्ष लगवाया तथा कूँए और धर्मशालायें बनवायी । कृ तथा के लिए सुन्दर व्यवस्था किया । दीन - दुखियों तथा अकाल पीड़ीतों की लिए भी समुचित व्यवस्था किया । औषधालयों का निर्माण कराया । नगरों की भोजन सामग्री की शुद्धता के लिए उसने बीरीक्षक रखे थे । इन सभी कार्यों का हुआ कि उसके काल में जनता सुख तथा सम्पन्नता का जीवन व्यतीत करती थी

जैन अनुश्रुतियों के अनुसार चन्द्रगुप्त ने 28 सालों तक अत्यन्त सफल शासन करने के बाद राजवैभव को त्यागकर 298 ई०पू० में सन्यास ग्रहण कर

उपसंहार

चन्द्रगुप्त मौर्य भारत के महान् सम्राटों में एक था । जिस निम्नस्थिति मे था उस स्थिति में जन्मा कोई विरला ही इतने ऊँचे पद पर पहुँच सकता है । ऐ पनक प्रगति का उदाहरण नेपोलियन जैसे दोक्क व्यक्ति ही मिल सकते हैं । बाल विधवा माता द्वारा पोषित यह लगभग अनाथ बालक भारत के सबसे बड़े साम्राज्य बनता है । चौथी शताब्दी ई०पू० के पश्चात 16 वीं० शताब्दी में मुगल साम्राज केवल बाबर ही एक ऐसा साम्राज्य संस्थापक मिलता है जिसने अपने बाहुबल द्वार मुगल साम्राज्य की स्थापना की । किन्तु बाबर के पास छोटी ही सही पैतृक रियासत थी , अपनी एक सेना थी , चन्द्रगुप्त के पास कुछ भी न था अतः स संस्थापक रूप में चन्द्रगुप्त अद्वितीय कहा जा सकता है ।

विजेता बाबर ने भी मुगल साम्राज्य की स्थापना की थी किन्त शास

Scanned with CamScanner

चन्द्रगुप्त की कला प्रियता का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण उसका राजमहल है। को उसने एक सुन्दर नगर के रूप में बनाया था। अइस प्रकार चन्द्रगुप्त निर्माता, राष्ट्रनिर्माता : शासक तथा मनुष्य प्रत्येक रूप में पूर्ण था